## शोध -प्रस्ताव

# कुरमाली संस्कृति में पर्वों का महत्व: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

**पीएच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप**
**स्नातकोत्तर कुरमाली विभाग**
**संकाय: जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा**
**राँची विश्वविद्यालय, राँची**
**वर्ष -2025**

**शोध निर्देशक**

डॉ0 गीता कुमारी सिंह
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर कुरमाली विभाग
राँची विश्वविद्यालय,राँची

**शोधकर्त्ता**

संतोष कुमार महतो
एम.ए. (कुरमाली)
यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ

**कुरमाली संस्कृति में पर्वों का महत्व: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन**

**शोध -प्रारूप**

**भूमिका:**

कुरमी समुदाय एक आदिम कृषक कविला है जो भारतवर्ष के झारखण्ड,पश्चिम बंगाल, उड़िसा, असम,बिहार, छतीसगढ़ आदि राज्यों में निवास करते हैं तथा अन्य देशों बांग्लादेश, नेपाल, भूटान में भी निवास करते हैं। जो एक टोटेमिक समुदाय है और इस समुदाय की मातृभाषा कुरमाली है तथा इसकी अपनी विशिष्ट संस्कृति है जिसे "**कुरमाली चारि**" कहा जाता है। इस प्रकार हम निः संदेह कह सकते हैं कि यह भू-खण्ड जितना पुराना है उतना पुराना संस्कृति भी है। यहाँ के पहाड़ों तथा गुफाओं में प्राप्त पुराने बहुमूल्य कला चित्र, पशु ,मनुष्य , धनुषबाण के साथ-साथ मनुष्य संबद्ध महत्वपूर्ण शिलालेख वैगरह मिला है इसलिए कहा जा सकता है कि यह संस्कृति काफी पुरानी है। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न समुदाय की सस्कृतियाँ एक दूसरे के संम्पर्क में विकसित हुआ है।

कुरमाली संस्कृति एक समृद्ध और विशिष्ट भाषा संस्कृति है जिसके मूल में बारह माह के तेरह पर्व है। कुरमाली पर्व मूलतः कृषि कर्म पर आधारित है एवं कुरमी समुदाय के लोगों के जीवन , विश्वासों और मूल्यों को प्रतिबिंबित करते हैं। इस समुदाय के साथ -साथ और भी कई कृषक समुदाय है जो साथ रहने के कारण इन पर्वों में से कुछेक पर्वों को मानते हैं। कुरमाली संस्कृति में पाये जाने वाले बारह माह के तेरह पर्व इस प्रकार है:-

1. **आखाइन जातरा**: यह कृषि वर्ष के आरंभ का सूचक है जो माघ महीने के पहले दिन हल चलाकर मनाया जाता है।
2. **सिझानअ**: यह पारंपरिक रूप से मंत्र तंत्र सिखाने पर तथा ज्ञान प्राप्त करने हेतु आयोजन किया जाता है।
3. **सारहुल**: यह नए साल में खेती तथा मोसम के पूर्वानुमान करने का पर्व है।
4. **भगता** : यह पुरखों के सामूहिक घाट कमान का पारंपरिक पर्व है।
5. **रहइन**: यह खेत में प्रथम बीज डालने का पांरपरिक पर्व है। इस दिन कई प्रकार के पारंपरिक आयोजन होते है।
6. **जाँताड़** : यह पर्व गांव के गवांदेवती या गराम थान में सामूहिक रूप से मनाया जाता है।
7. **आसाड़ी पुजा**: यह खेत में धान रोपने से पहले किया जानेवाला पर्व है।
8. **मानसा** : यह पर्व धान रोपाई की समाप्ति पर किया जाने वाला पर्व है।
9. **करम**: यह कुरमाली भाषा संस्कृति का सबसे महान पर्व है और विशेषकर कुंवारी बच्चियों द्वारा कम से कम सात दिनों तक मनाया जाता है।
10. **जितिआ**: यह पर्व मां बनने पर औरतों द्वारा किया जाता है।
11. **बाँदना/सोहराइ**: यह पर्व खेती करने में सहायक पशुओं की आराधना करने हेतु किया जानेवाला पांच दिवसीय पर्व है।
12. **डिनि साँकराइत**: यह धान कटाई होने के उपरांत मनाये जानेवाला पर्व है। इस दिन से टुसू पर्व आरंभ होता है।

13. **दुसु**: यह कुरमाली संस्कृति में वर्ष के समापन का तिन दिवसीय पर्व है जिसमें विशेषकर उन्धि पीठा बनाया जाता है।

**शोध की प्रेरणाः**

वृहद छोटानागपुर पठार के झारखण्ड राज्य मेरा जन्मभूमि एवं कर्मभूमि ग्रामिण परिवेश में जन्मा और इसी परिवेश खेला-कुदा और पला-बढ़ा हूँ। बाल्यवस्था से ही ग्रामीण परिवेश में पले -बढ़े के कारण गाँव के समस्त पर्व त्योहारों में जाना होता है । गाँव के जितने पर्व त्योहार हैं सभी को बहुत ही श्रद्धा से मानता आ रहा हूं। बाल्यवस्था से ही बारह माह के तेरह पर्व की महत्व को जानने की प्रबल इच्छा रही है। क्योंकि मेरा पर्वों पर विशेष लगाव रहा है। जब मैं स्नातकोत्तर में नामांकन कराया तो कुछेक हद तक लगा की पर्वों के महत्व को अब जान पाएंगे। क्योंकि मैं कुरमी समुदाय घर में पैदा हुआ हूं और मेरी मातृभाषा कुरमाली है। जब से होश सम्भाला हूं तब से बारह माह में तेरह पर्व को अपने बड़े बुजूर्ग घर परिवार को मानते देखते आ रहा हूं।

स्नातकोत्तर के दौरान इन पर्वों को नजदीक से जान पाया हूं। इस दौरान मुझे ऐसा लगा की मैं अपनी मातृभाषा कुरमाली में संस्कृति के पर्व के क्या-क्या महत्व हैं उस पर शोध कर मैं भी अपने मातृभाषा के लिए कुछ योगदान करू।

संस्कृति के प्रति झारखण्ड प्रदेशवासियों का श्रद्धा, प्रेम एवं अटूट विश्वास है। इसी लगाव के कारण ही कुरमी समुदाय अपने त्याहारों को पीढ़ी दर पीढ़ी मनाते आएं हैं और संजोये रखे हैं। जबकि बहुत कम या कहे तो ना के बराबर लिखित प्रमाण मिलता है। कहा जाता है कि भारत गाँव में बसता है। और गाँव कृषि पर आधारित है। हम कुरमी समुदाय का भी मुख्य पेशा कृषि है। और गाँव में जितने भी मुख्य-मुख्य पर्व है अधिकतर कृषि पर आधारित है। 'धान' कुरमी समुदाय का मुख्य फसल है। जैसे-जैसे धान बढ़ता है वैसे -वैसे पर्व भी मनाते हैं। कुरमाली संस्कृति में पहला पर्व धान से ही शुरू होता है। और अंतिम पर्व भी धान से ही समाप्त होता है।

जब इस विषय पर अपने शोध निर्देशिका से चर्चा किये तो उन्होंने मुझे कुरमाली संस्कृति में पर्वों का महत्व: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन विषय पर कार्य करने के लिए प्रेरित किये। जिससे मेरे अंदर एक नया उत्साह उत्पन्न हुआ मैं इसके लिए अपने गुरूजनों के साथ -साथ जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग का भी आभारी हूं कि मुझे इस विषय पर शोध करने का अवसर दिया गया।

**उद्देश्यः**

इस शोध कार्य का उदेश्य कुरमाली संस्कृति में पर्वों के महत्व का विश्लेषण करना है इस अध्ययन का उदेश्य यह समझना है कि कुरमी समुदाय के द्वारा की जाने वाली पर्वों का उदेश्य निम्न प्रकार है:-

1.कुरमाली संस्कृति में पर्वों के इतिहास का अध्ययन करना।

2.कुरमाली संस्कृति में पर्वों के महत्व एवं उपयोगिता का विश्लेषण करना।

3.कुरमाली संस्कृति में पर्वों के समाजिक सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व एवं उपयोगिता का विश्लेषण करना।

4.कुरमाली संस्कृति में पर्वों के आधुनिक समाज में महत्व का अध्ययन करना।

5.कुरमाली संस्कृति में पर्वों का वर्तमान परिपेक्ष्य में दशा को जानना।
6.कुरमाली संस्कृति में पर्वों की वैज्ञानिकता का विश्लेषण करना।

**महत्व:**

कुरमाली संस्कृति कुरमी समुदाय में पाये जाने वाली विशिष्ट संस्कृति है जो भारत वर्ष के अंतर्गत वृहद झारखण्ड के अलावे पश्चिम बंगाल के पुरूलिया, बांकुड़ा, मेदनीपुर,झाड़ग्राम, उड़ीसा के क्योंझर ,राउरकेला,सुदंर गढ, असम एवं बांग्लादेश की टोटेमिक कुरमी जनगोष्ठी की प्राचीनता को दर्शाती है। कुरमाली पर्वों के अध्ययन से कुरमी समुदाय की धार्मिक एवं पांरम्परिक मान्याताओं को अच्छी तरह से समझा जा सकता है। तथा इनके पुर्वजों की रहन -सहन , वेशभूषा, खान-पान आदि संस्कृति के विभिन्न अयामों को जान सकते हैं। कुरमाली पर्व सामुहिक रूप से मनाया जाता है।जिसमें अपने परिवार के साथ-साथ गाँव के सभी लोग शामिल होते हैं तथा इसमें हित-मितानों एंव रिश्तेदारों का विशेष ख्याल रखा जाता है।फलस्वरूप इनके रिश्तेनाते काफी मजबूत होती है। इस तरह इनके जीवन में कुरमाली पर्व विशेष महत्व रखते हैं।

**परिकल्पना:**

कुरमाली ससं्कृति में निहित पर्वों के सभी तथ्यों की जानकारी प्राप्त कर इसके महत्व और आदिमता को उजागर किया जा सके, ताकि शोध विषय के चुनने की सार्थकता सिद्ध हो

साथ ही इस समुदाय के सामाजिक आर्थिक धार्मिक राजनीतिक संवेदनाओं की व्याख्या करना इसके साथ-साथ निवास करने वाले विभिन्न जनसमुदायों के लोग भी इन पर्वों के संरक्षण एवं वाहक होते हैं। वस्तुतः कुरमाली संस्कृति के पर्व एक कबिलाई जीवन पद्धति के विविध आयामों का समझ विकसित हो

1.कुरमाली संस्कति में पर्व पाये जाते है।
2.कुरमाली संस्कृति में पर्व कृषि आधारित है।
3.कुरमाली संस्कृति में पर्व का विशेष महत्व है।
4.कुरमाली संस्कृति में पर्व लोगों के समुदायिक सहयोग की भावना को बढ़ावा देते हैं।
5.कुरमाली संस्कृति के पर्वों पर अन्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा है।
6.कुरमाली संस्कृति के पर्वों की समस्याओं एवं नए विमर्शों की पहचान करना

**शोध विधि:**

यह शोध कार्य में कुरमी समुदाय के अनुभवी एवं जानकार लोगों के साथ साक्षात्कार और सर्वेक्षण के माध्यम से कुरमाली संस्कृति में पर्वों के सम्बन्ध में डेटा एकत्र किया जाएगा। साक्षात्कारों और सर्वेक्षणों में कुरमी समुदाय के लोगों से उनके पर्वों के ऐतिहासिकता के बारे में जानकारी एकत्र की जाएगी। साथ ही इन पर्वों में रचे बसे सामाजिक जीवन दर्शन की गहराईयों की पड़ताल की जाएगी।

1.अवलोकन विधि
2.व्याख्यात्मक विधि
3.विश्लेषणात्मक विधि

4.वर्णनात्मक विधि
5.साक्षात्कार विधि

## शोध प्रारूप

## कुरमाली संस्कृति में पर्वों का महत्व: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तावना:-
शोध कार्य का विषय
शोध कार्य का उद्देश्य
शोध कार्य का महत्व
शोध कार्य की प्रासंगिकता
शोध कार्य की परिकल्पनाएँ
विषय से संबंधित पूर्व में दिए गए शोध कार्यों का विवरण।

**प्रथम अध्याय**

1.कुरमाली संस्कृति का सामान्य परिचय
1.1 कुरमाली संस्कृति का स्वरूप
1.2कुरमाली संस्कृति की परंपरा
1.3कुरमाली संस्कृति की विशेषताएं
1.4 कुरमाली संस्कृति की व्यापकता

**द्वितीय अध्याय**

2.कुरमाली संस्कृति के पर्वों का सामान्य परिचय
2.1 कुरमाली संस्कृति में पर्वों का इतिहास और विकास
2.2 कुरमाली संस्कृति में कृषि और पर्व
2.3 कुरमाली संस्कृति में पर्वों के स्वरूप

**तृतीय अध्याय**

3.कुरमाली संस्कृति के पर्वों का वर्गीकरण
3.1 कुरमाली संस्कृति में कृषि आधारित पर्व
3.2 कुरमाली संस्कृति में व्रत आधारित पर्व
3.3 कुरमाली संस्कृति में पूजा-पाठ आधारित सामूहिक एवं एकल पर्व
3.4 कुरमाली संस्कृति में स्त्री प्रधान पर्व
3.5 कुरमाली संस्कृति में पुरूष प्रधान पर्व
3.6 कुरमाली संस्कृति में बालक/बालिका प्रधान पर्व

**चतुर्थ अध्याय**

4.कुरमाली संस्कृति के पर्वों में नृत्य-संगीत
4.1 कुरमाली संस्कृति के पर्वों में जावा नृत्य
4.2 कुरमाली संस्कृति के पर्वों में छउ नृत्य

4.3 कुरमाली संस्कृति के पर्वों में नटुआ नृत्य
4.4 कुरमाली संस्कृति के पर्वों में बरद खूँटा/बरद भिड़का
4.5 कुरमाली  संस्कृति के पर्वों में अढ़ेइया नृत्य
4.6 अन्य नृत्य
4.7 कुरमाली संस्कृति के पर्वों में नृत्य संगीत से जुड़े वाधयंत्र

**पंचम अध्याय**

5.कुरमाली  संस्कृति के पर्वों में कला एवं शिल्प
5.1 कुरमाली संस्कृति में पर्व से जुड़ी कलाएं
5.2 कुरमाली संस्कृति में पर्व  के शिल्प
5.3 कुरमाली  संस्कृति में शिल्प कला से जुड़े कलाकार
5.4 कुरमाली संस्कृति में कला एवं शिल्प का महत्व

**षष्ट्म अध्याय**

6.कुरमाली संस्कृति में पर्वों का महत्व
6.1 सामाजिक महत्व
6.2 धार्मिक महत्व
6.3 आर्थिक महत्व
6.4 राजनीतिक महत्व
6.5 पर्यावरणिक महत्व
6.6 वैज्ञानिक महत्व

**सप्तम अध्याय**

7वर्तमान परिपेक्ष्य पर कुरमाली संस्कृति में पर्वों का दशा एवं दिशा
7.1 वर्तमान स्थिति
7.2 अन्य धर्मों में प्रभाव
7.3 उपयोगिता/प्रासंगिता
7.4 दशा एवं दिशा
7.5 आधुनिकता का प्रभाव

**परिशिष्ट**

1.आधार ग्रंथ सूची
2.सहायक ग्रंथ सूची
3.पत्र-पत्रिका
4.साक्षात्कार की सूची
5.चित्रावली

नोट: प्रास्तावित अनुसंधान के रूप-रेखा में परिवर्तन भी अपेक्षित होंगे।

शोध निर्देशक शोधकर्त्ता

डॉ0 गीता कुमारी सिंह
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर कुरमाली विभाग
राँची विश्वविद्यालय,राँची

संतोष कुमार महतो
एम.ए. (कुरमाली)
यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ

## आधार ग्रंथ सूची

1.सिन्हा, डॉ0 ए.पी. - 'झारखण्ड की जनजीवन लोक संस्कृति पर्व त्योहार एवं देवी देवता', विकास प्रकाशन सोनिया बिहार दिल्ली -2011

2.दिनकर, रामधारी सिंह, - 'संस्कृति के चार अध्याय', उदयाचल, पटना 1956.

3.शर्मा, आर. एस., -'शूद्रों का प्राचीन इतिहास', मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लि., नई दिल्ली, 1979.

4.चट्टोपध्याय, डी.पी. , - 'लोकायत', राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1982.

5.गौंझू, डॉ0 जी.आर. - 'झारखण्ड की पांरपरिक कलाएँ'

6.महतो, पी.पी. -1. 'संस्कृताइजेशन वर्सेस निर्बाकाइजेशन', पुर्वालोक पब्लिकेशन कलकता 2000.

7.मेहता, बी. के. - 'कुड़मालि चारि', कुड़मालि भाखि बाइसि, राँची, 1989.

8.वीरोतम, वी. - 'झारखण्ड: इतिहास एवं संस्कृति', बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2000.

9.कृष्णा, एस. - 'झारखण्ड के मेले', प्रभात प्रकाशन , दिल्ली - 2016.

10.मुतरूआर, एल. के. -'जनजाति परिचिति', मुलकि कुड़मालि भाखि बाइसि, रांची 2001.

11.महतो, डॉ0 चर्तुभुज - 'कुड़मि संस्कृति: एक झलक', क्योंझर उड़ीसा 2007

12.सिंह, डॉ0 जी. - ‘कुरमाली लोक साहित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन‘, झारखण्ड झरोखा, राँची- 2014
13.महतो, एस.के. - ‘वृहत छोटानागपुर के आदि बुनियाद‘, -2024

## सहायक ग्रंथ सूची

1.डाल्टन, इ. टी - ‘डिस्क्रिप्टिव इथनोलॉजी ऑफ बंगाल‘ ऑफिस ऑफ द सुपरिटेन्डेंट ऑफ गवर्नमेंट प्रिंटिग, कलकता, 1872.
2.महतो, डॉ0 बी0 - ‘कुड़मी समुदाय की सांस्कृतिक धार्मिक परंपरा‘ ,के0के0 पब्लिकेशन्स इलाहाबाद - 2018
3.केडुआर, एन. सी. -‘सारना और कुड़मालि पर्व त्योहार‘, शिवांगन प्रकाशन पटना 2020.
4.मेलि, एल. एस. एस. ओ. -1. ‘बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स‘: मिदनापुर सेक्रेटेरिएट बुक डिपो, कलकता 1911.
5.महतो, डॉ0 पी.पी. - ‘कुड़मालि के बांदना गीत: एक सांस्कृतिक अध्ययन‘, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन राँची - 2014
6.कूपलैंड,एच. - ‘बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स‘ मानभूम, दी बंगाल सेक्रेटेरिएट बुक डिपो, कलकता 1911.
7.पाण्डेय, जी. - ‘भारतीय जनजातीय संस्कृति‘, कॉन्सेप्ट पब्लिसिंग कम्पनी, नई दिल्ली -2007
8.राय, पी.सी. - 1. ‘बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स: धनबाद‘, सेक्रेटेरिएट प्रेस, पटना, 1964.
9.सिंह, के. एस. - ‘पीपल ऑफ इंडिया‘ खंड-16, भाग -2 एन्थ्रोपोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, सीगुल बुक्स, कलकता, 2008.
10.बानुहड़, तारनि - ‘महुआ -मधु‘ कुड़मालि भाखि चारि आखड़ा 2021
11.सिंह, डॉ0 एन.के. - ‘कुरमाली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन‘
12.केसरी, डॉ0 वी.पी. - ‘झारखण्ड के सदान‘
13.कुमारी, डॉ0 ए. - ‘सदानों की कला संस्कृति‘
14.कुल्लू, पी. -‘खड़िया धर्म और संस्कृति का विश्लेषण‘

15.महतो, वी.सी. -‘छोटानागपुर के कुरमियों का इतिहास‘ -1982
16.कुड़मि, एस. - ‘असम में कुड़मालि भाषा और संस्कृति की वर्तमान स्थिति‘, आदिवासी कुड़मि समाज राँची -2023
17.सिंह, जी. - ‘आदिवासी स्मिता और कुरमी महतो‘ -2022
18.महतो, एस. - ‘झारखण्ड की समरगाथा‘, निधि बुक्स नई दिल्ली -2011
19.महतो, के. एवं महतो, वी. - ‘कुड़मालि भाषा व संस्कृति‘, मुलकी कुड़मालि भाखि बाईसी, पुरूलिया -2021
20.महतो, पी. एवं महतो, ए.के. - ‘कुड़मालि साहित्य -संस्कृति का संक्षिप्त इतिहास‘, मानव प्रकाशन कोलकाता -2021
21.कुजूर, एम. - ‘उराँव संस्कृति‘, कैथोलिक प्रेस, राँची
22.गौंझू डॉ0 जी.आर. - ‘ऋतु के रंग मांदर के संग‘, प्रिय साहित्य सदन दिल्ली
23.लकड़ा, जे. - ‘आदिवासी संस्कृति तब और अब‘
24.सरकार, पी.आर. - ‘सभ्यतार आदि बिंदु राढ़: खण्ड -1‘, आदर्श मार्ग प्रचारक संघ कलकता-1971
25.हेम्ब्रेम,आर. - ‘संताली लोक गीतों साहित्य और संस्कृति‘, जमशेदपुर -2005

## पत्र -पत्रिकाएँ

1.आखाइन - त्रैमासिक पत्रिका धनबाद -2010
2.डहर - छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ राँची।
3.कुरमाली - झारखण्ड आदिवासी कुड़मि समाज राँची।
4.मानभूम एक्सप्रेस - झालदा पुरूलिया (पश्चिम बंगाल)
5.करम तीर्थ - पुरूलिया (पश्चिम बंगाल) -1980-86
6.टेंसफुल - धनबाद झारखण्ड -1995
7.बिनोद डहर - राजश्री प्रेस धनबाद -2000
8.जाहली - पुरूलिया (पश्चिम बंगाल)
9.सरहुल - त्रैमासिक पत्रिका पुरूलिया (पश्चिम बंगाल)
10.बनफुल - मासिक पत्रिका, कुड़मालि भाषा संस्कृति परिषद -2002
11.फुरूंग - प. मेदनीपुर, (पश्चिम बंगाल)
12. आदिवासी - बिहार सरकार, राँची।
13. ज्योति - असम
14.बिहिन - बोकारो
15.मूलूक - पुरूलिया (पश्चिम बंगाल)
16.झारखण्ड दर्शन - कलकता -1988
17.माड़अइर - बोकारो -2020-21